धान की नई प्रजाति "स्वर्ण शक्ति धान" का बरमसिया, रामगढ़ में प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया

जलवायु परिवर्तन की इस दौर में जब किसान कि फसल पानी की कमी/अभाव के कारण सूख रहे हैं तब कृषि विज्ञान केंद्र, रामगढ़ द्वारा उपलब्ध करायी गई धान की नई प्रजाति "स्वर्ण शक्ति धान" लगाने वाले किसान बहुत ही संतुष्ट हैं | भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना के अंतर्गत कार्यरत कृषि विज्ञान केंद्र, रामगढ़ के प्रभारी डॉ० दुष्यंत कुमार राघव एवं डॉ० इन्द्रजीत ने किसानों के लिए सुखाड़ सहनशील धान की प्रजाति स्वर्ण शक्ति धान का बीज अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के लिए किसानों को वितरण किया | यह प्रजाति भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का पूर्वी अनुसंधान परिसर पटना के कृषि वैज्ञानिक डॉ० संतोष कुमार द्वारा विकसित किया गया है | डॉ० राघव ने कहा कि यह प्रजाति 115 से 120 दिनों में तैयार हो जाती है, अर्ध-बौनी, अधिक उपज (45 से 50क्विंटल/हेक्टेयर) एवं सूखा रोग एवं कीट सहिष्णु स्वाभाव की है | उच्च गुणवत्ता एवं सूक्ष्म पोषक तत्व मुख्यतः जिंक एवं लोहा की प्रचुर मात्रा होती है | वर्षा वितरण में होने वाले बदलाव को झेलने में सक्षम है | कम पानी वाले सिंचित एवं सूखा ग्रस्त वर्षा आधारित क्षेत्रों में भी सीधी बुआई द्वारा खेती के लिए उपयुक्त है | स्वर्ण शक्ति धान फसल के प्रमुख रोगों जैसे पर्ण-छंद, अंगमारी, आभासी कड, झोंका रोग, जीवाणु पर्ण झुलसा, ब्लास्ट, तुन्ग्रू एवं भूरी चित्ती के साथ-साथ प्रमुख कीटों जैसे तना छेदक, माहू कीट आदि से प्रतिरोधक है | डॉ० इन्द्रजीत ने किसानों को बताया कि खेत की तैयारी में गर्मी के मौसम में एक गहरी जुताई करना चाहिए जिससे खर-पतवार, कीड़े और रोगों के प्रबंधन में मदद मिलती है | धान की सीधी बुआई द्वारा भी इस प्रजाति का अच्छा उत्पादन है | उन्होंने बताया कि इस प्रजाति की बुआई का सर्वोत्तम समय जून माह के दूसरे सप्ताह से जून का अंतिम सप्ताह तक बीज सह उर्वरक ड्रिल मशीन द्वारा लगभग 25 से 30 कि०ग्रा०/हेक्टेयर की दर के साथ 3 से 5 से०मी० गहराई एवं 20 से०मी० की दूरी पर बुआई की जाती है | अच्छी उपज लेने के लिए मृदा जांच के अनुसार पोषक तत्व प्रबंधन बहुत आवश्यक है | इस प्रजाति में अन्य किस्मों से 40 से 50 प्रतिशत पानी की बचत होती है | बरमसिया में प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम में कृषि विज्ञान

केंद्र की टीम एवं डालचंद, खिरोधर महतो, प्रदीप, जुगेश, मिलो देवी, बबिता देवी समेत 100 से अधिक किसानों ने भाग लिया | किसानों ने प्रजाति से सम्बंधित कई प्रकार के प्रश्न पूछे जिसका वैज्ञानिकों द्वारा जवाब दिया गया | कृषि विज्ञान केंद्र बीज उत्पादन कर के इस प्रजाति का वृहद पैमाने पर किसानों को बीज उपलब्ध कराया जाएगा |